समुद्री संपत्ति

टी. टी. अन्नम्मा

सागरों की अपनी एक दुनिया है । पृथ्वी का 71 प्रतिशत भाग सागरों का है केवल 29 प्रतिशत ही स्थल है । समुद्र की उत्पत्ति कुछ-कुछ अस्पष्ट है । विश्वास किया जाता है कि जीवन की पहली किरण सब से पहले सागरों में ही प्रस्फुटित हुई । करोडों वर्ष पूर्व सभी पौधे और जीव समुद्रों में थे । फिर किसी तरह स्थल पर कुछ पौधे और जीवन और अंत में मनुष्य भी ।

एक जमाने में ऐसा सोचा जाता था कि समुद्रतल एकदम मन्द और विरस है । मगर यह सच नहीं है । वर्षों से उठा ले आए खनिज तथा समुद्रजल के बाष्पीकरण आदि से उनकी लवणता धीरे धीरे बढ़ती रहती थी । प्राचीन काल से अन्तर्जलीय अध्ययन के लिए आदमी में दिलचस्पी थी । समुद्र संबंधी वैज्ञानिक अध्ययन लिए गए प्रथम व्यक्ति है अमरिका के मैथ्यू फोन्टैन मॉरी (Mathew Fontaine Maury) (1806-1873) । उन्होंने सन 1755 में इस विषय पर 'समुद्र के भौतिक भूगोल विज्ञान' नामक प्रथम पुस्तक लिखी । चार्लस विलि थॉम्सन (Charles Wyville Thomson) नामक एक स्कोटिश प्राणि वैज्ञानिक ने प्रथम समुद्रगामी पर्यवेक्षक किया जिन्होंने एक ब्रिटीश जहाज़, 'चलेन्जर' (Chanllenger) में सारे समुद्रों की जलयात्रा करके हज़ारों तरह के नमूने ईकट्ठे किए थे ।

सागर करोडों तरह के छोटे-बडे जीवों तथा अचेतन वस्तुओं से भरी हुई निधि का एक विचित्र भण्डार है जिनमें कुछ तो उपयोगी और दूसरे कुछ हानिकारक हैं। दुनिया के सबसे भीमाकार और खतरनाक नीली ह्वेल (Blue whale), समझदार एवं मनोरंजक डॉल्फिन, परप्वाज़ (porpoises) सील आदि स्तनपायी जीव समुद्र में तैरते रहते हैं । प्राचीन काल से आदमी उनकी हड्डी, तेल और चमड़े के लिए उनका शिकार करते थे । साबून, मारगरीन, वस्सा, उर्वरक आदि के निर्माण में उनका उपयोग किया जाता है ।

लेकिन समुद्र के सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी संपत्ति मछली ही है । संसार के अधिकांश लोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में मात्स्यकी क्षेत्रों - मत्स्यग्रहण, मत्स्योद्योग, मात्स्यकी अनुसंधान आदि - से संबंधित है । अन्तर्देशीय बाज़ार में मत्स्य सब से मुख्य खाद्य पदार्थ है । मत्स्य एवं मात्स्यकी उत्पन्न उच्च गुणता प्रोटीन का सस्ता स्रोत है । मत्स्य केवल खाद्यवस्तु ही नहीं बल्कि उन का हर एक भाग-हड्डी, शल्क, आंत्र, सीप, चमड़ा, पंख, तेल बगोराके की असीम संभावनाऐं हैं । जनसाधारण का यह समुद्री खाद्य, समुद्र से अधिक लाभ एवं बहुमूल्य विदेशीमुद्रा ले आता हैं ।

अनंतजाति समुद्री मछलियों में कुछ प्रमुख हैं, शार्क, सालमन, रे फिश, ट्राऊट सीर, ट्यूणा, पोम्फ्रेट. सार्डीन बॉगडा, झींगा, वगैरह तथा फीता मछली, रजतमत्स्य, एलकॉवी, कुकुरजीभी, सर्पमीन, आदि विविध मछलियाँ । सोनामत्स्य, डैनियो, काली मैली, तैगमछली, ऐंजल फिश आदि सुन्दर रंगोंवाली आलंकारिक मत्स्य मछलीघर में पालने योग्य है । अब रंग-बिरंगी मछलियाँ पैदा करने का व्यवसाय दुनिया के बहुत से भागों में, विशेषकर चीन और जापान में, होता है ।

अपनी उदरपूर्ति के लिए नयी नयी समुद्री संपत्ति की खोज से आदमी दूसरे अनेक जाति के प्रोटीन समृद्ध प्राणियों को भोजन के उपयोग के लिए काम में लाया, जैसे जलसाही, समुद्रीरुकड़ी, समुद्रफूल (शैवाल), समुद्रफेनी, स्क्विड, कछुआ, चिंगट, केकड़ा (महाचिंगट), कर्कट, क्रिल, कस्तूरा (सीप) घोंघा, जेली फिश, शम्बुक वगैरा । ये सब स्वादिष्ठ भोज्य है । इन से कई प्रकार के विशेष उत्पन्न तैयार किये जा सकते हैं।

अन्तर्जलीय शोधार्थियों ने समुद्र से दूसरे अनेक मूल्यवान संपत्ति को ढूँढ़ निकला है । करोड़ों वर्ष पहले समुद्र में भरे हुए एककोशिकीय जन्तुओं (Protozoa) के अवशेषों तथा लोहे

की कच्ची धातु एवं मैगनीज़ आदि खनिज भी समुद्र में उपलब्ध हैं, जिनसे आदमी अपना घर, हथियार और आभूषण बनाया करते थे । ताँबा, चाँदी, टीन और जस्ता के निर्माण के लिए खनिज आवश्यक है ।

मूँगा निक्षेप हैं और एक बहुमूल्य धन । ये भी लाखों करोड़ों नन्हे समुद्री जीवों के अवशेष माने जाते हैं । मूँगे अपने लिए जो 'घर' बनाते हैं वे मूंगे छीपों और जलमग्न समुद्री चट्टानों के रूप में मिलते हैं । इस प्रकार के एक अपतट मूंगा जल-शैल है, पूर्व आस्त्रेलिया के 'दि ग्रेट बारियर रीफ' (The Great Barrier Reef) लाल मूंगा अत्यधिक कीमती है जिसके मनके बनाए जाते हैं । इस का उपयोग केवल आभूषण के लिए ही नहीं है कालिफोर्णिया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने साबित कर दिया है कि उचित रूप से संसाधित मूंगा, हड्डी प्रतिरोपण के लिए उत्कृष्ट उपकरण है ।

शुद्ध एवं मूल्यवान मोती भी कुछ समुद्री 'मोलस्कों' के सीपियों में से निकलते हैं । इसी प्रकार घोघा, क्लैम आदि अकशेरुकी जीवों में से छोटे-बडे रंगबिरंगे शंख और खोल भी मिलते हैं जिन्हें कलाकाँति के रूप में उपयोग किया जा सकता हैं । 'मोलस्क' हमारे आहार का एक बड़ा साधन है । उनकी सीपियों से हमारे लिए बटन बना सकते हैं । किसी जमाने में दुनिया के अनेक भागों में शंखों और कौडियों का मुद्रा के रूप में उपयोग किया जाता था ।

भिन्न जाति समूद्री घास, काई, सेवार आदि बनाया जा सकते हैं । समुद्री घास औद्योगिक तथा अनुसंधान के प्रयोजन के लिए अच्छी गुणता के शाकाहारी योगज का प्रबंध करते हैं ।

तेल और प्राकृतिक गैस की उत्पत्ति भी समुद्र तल में है, जिनको तापन, भोजन पकाने और अन्य अनेक प्रयोजन के लिए चलाया जा सकता है । सागरों का जलवायु पर बड़ा प्रभाव है । यह बताने की ज़रुरत नहीं है कि नमक उत्पादन का सस्ता तरीका समुद्रजल का बाष्पीकरण है । आनेवाली वर्षों में हमारी जल-आपूर्ति का अधिकांश भाग भी निस्संदेह, लवणमुक्त समुद्रजल से पाया जाएगा । गहरा समुद्रजल बहुत पुष्टिकारक है । समुद्र संवर्धन बढ़ाने के लिए जापान में गहराई समुद्रजल को पम्प किया जाता है ।

मानवजाति को बहुत ही उपयोगी समुद्र, खतरनाक जीवों से भी मुक्त नहीं है । उन्हें घृणित प्राणियों से लेकर भीमाकार, हानिकारक, विषैले जीवों - जैसे नीली ह्वेल, इलक्ट्रिक फिश, पनिहा, ऑक्टोपस, तारक मछली आदि-तक समुद्री निवासी हैं।

अबतक समुद्रकृषि के बारे में हमारी जानकारी बहुत सीतिम थी । किन्तु बढ़ती आबादी के इस युग में हमें इस पर सोचना है । विघटनकारी अवशिष्ट जैसी चीज़ें समुद्र में फेंक देते वक्त, वे निरापद न छितराए जाएं तो समुद्रसंपत्ति को हानिकारक सिद्ध हो जाएगा । एपीस्युटिक अलस्त्रेटीव सिन्ड्रों (EUS) जैसी विनाशक बीमारियाँ मात्स्यकी संपत्ति को धमकानेवाली है । समुद्री संपत्ति प्रकृति की अनमोल देन है । राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए समुद्री संपत्ति की पूरी तरह शोषण करना अनिवार्य है । गहरे समुद्रों के अंधेरे गर्तो में और भी कितने विचित्र जीव तैरते रहते होंगे । सागर इस प्रतीक्षा में है कि समुद्री वैज्ञानिक एवं अन्तरजलीय शोधकर्ता उसकी गहराई में छिपे और भी अमूल्य रत्नों की खोज निकालने में समर्थ होंगे ।

■■■